B - III
L - 19
MIH

नागरिक विद्रोह / 1857 का विद्रोह / क्रान्ति

क्या है- • इसी विद्रोह में समाज के विविध वर्गों की भागीदारी जैसे- शासक वर्ग, किसान, कारीगर इत्यादि।

तथ्यात्मक जानकारी :-

* संन्यासी विद्रोह -(1763 - 1800) क्षेत्र - बंगाल
  नेता एवं अन्य - बंकिमचन्द्र के आनन्द मठ नामक उपन्यास संन्यासी विद्रोह पर आधारित है।
  ↓
  भवानी पाठक एवं देवी चौधरानी

KCS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

* फकीर विद्रोह (1776 - 77) ⇒ क्षेत्र - बंगाल
  नेता - मजनून शाह, चिराग अली

* पोलिगर (जमींदार - सशस्त्र सेना भी रखते थे)
  ↓
  (1799 - 1801) - (तमिलनाडु)

* दीवान वेलू थम्पी का विद्रोह (1808 - 09) - त्रावणकोर

* पाइक विद्रोह (1817 - 25) - क्षेत्र - उड़ीसा (खुरदा क्षेत्र में)
  नेता - जगबंधु

* चेनम्मा विद्रोह - (1824) ~~कित्तूर~~ (कर्नाटक)
  (महिला)

* फ़रायज़ी विद्रोह (1838-57) बंगाल
नेता - शरीयतुल्ला दादु मियां

* सतारा विद्रोह (1840-41) - महाराष्ट्र
नेता - धराराव

* सावंतवाड़ी विद्रोह (1844) महाराष्ट्र -
नेता - फोंड सावंत

* गडकरी विद्रोह (1844) महाराष्ट्र
नेता - बाबा जी अहिरेकर

* पागलपंथी विद्रोह (1820-50) के दशक - बंगाल
नेता - करमशाह, टीपू

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

* वहाबी विद्रोह - (1830 - 1863) - पंजाब एवं देश अन्य भागों में
नेता - सैय्यद अहमद बरेलवी

- प्रारम्भ में यह सिखों के विरुद्ध हुआ था आगे चलकर अंग्रेजों के विरुद्ध।
- इसका उद्देश्य था भारत को मुस्लिम राष्ट्र बनाना।

* कूका विद्रोह (1840-1872) - पंजाब
नेता - भगत जवाहर मल एवं बाबा राम सिंह

• प्रारम्भ में यह धर्म सुधार पर केन्द्रित था और आगे चलकर ब्रिटिश विरोध पर केन्द्रित हो गया।

सामान्य विशेषता :-

• इन विद्रोहों में विभिन्न वर्गों की भागीदारी थी इसलिए इसे नागरिक विद्रोह कहते हैं।

• 1857 के विद्रोह से पूर्व 40 से अधिक बड़े विद्रोहों की जानकारी मिलती है और 1857 के विद्रोह को नागरिक विद्रोह का चर्मोत्कर्ष माना जाता है।

• जिन जिन क्षेत्रों में अंग्रेजों का नियंत्रण स्थापित होता गया उन-उन क्षेत्रों में अंग्रेजों की विस्तारवादी नीतियों के कारण लोगों का असंतोष बढ़ा। और इसकी अभिव्यक्ति नागरिक विद्रोह के रूप में हुई जैसे- पूर्वी भारत में सन्यासी एवं पाइक विद्रोह, दक्षिण भारत में पोलिगर एवं चेनम्मा का विद्रोह, पश्चिम में सतारा तथा उत्तर पश्चिम भारत मे कूका विद्रोह।

• हालांकि कुछ विद्रोहों में उपर्युक्त कारणो के साथ-साथ धार्मिक कारक भी जिम्मेदार थे जैसे- वहाबी, कूका इत्यादि।

• इन विद्रोहों का लक्ष्य था पुरानी व्यवस्था की स्थापना करना।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

- विद्रोह के दौरान ब्रिटिश सरकार को हिंसात्मक तरीके से चुनौती दी गई।
- विद्रोहों का प्रसार स्थानीय स्तर तक था और नेतृत्व भी स्थानीय था।
- विद्रोह संगठित नही था नही इस पर राष्ट्रीय चेतना का प्रभाव था।
- चूँकि विद्रोह हिंसक प्रकृति का था इसलिए सरकार ने भी कठोरता पूर्वक विद्रोहों का दमन किया।
- असफलता के बावजूद इन विद्रोहों ने अंग्रेजों को उग्र तरीके से चुनौती प्रस्तुत की, यह परम्परा आगे भी जारी रही और विद्रोह से संबंधित पूर्व गाथाओं ने आने वाली पीढ़ी को प्रभावित किया।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

नोट :-

* विद्रोह (शब्द) : प्राय: व्यवस्था से असंतुष्ट वर्गों के द्वारा हिंसक विरोध के लिए प्रयोग किया जाता है (असफल)

* क्रान्ति :-
प्राय: व्यवस्था से असंतुष्ट, हिंसक प्रतिरोध और विरोधियों को व्यवस्था परिवर्तन में सफलता मिलती है।

1857 का विद्रोह / क्रान्ति

कारण :-

आर्थिक कारण :-

- अंग्रेजो की विस्तारवादी एवं आर्थिक नीतियों ने समाज के एक बड़े वर्ग को बुरी तरह से प्रभावित किया जैसे- विस्तारवादी नीतियों के कारण राजपरिवार, राज दरबार पर निर्भर विभिन्न वर्ग की आर्थिक दशा दयनीय हो गयी।
- भू राजस्व बंदोबस्त एवं उद्योगों के पतन के कारण क्रमशः किसानों एवं कारीगरों की आर्थिक स्थिति में व्यापक गिरावट हुई।

राजनीतिक कारण :-

- अंग्रेजों की विस्तारवादी नीतियों के कारण शासक वर्ग में पहले से ही असंतोष व्याप्त था क्योंकि या तो उनके राज्यों का विलय कर लिया गया या उन्हे नाममात्र के अधिकार दिए गए।
- डलहौजी की आक्रामक नीतियों के कारण नाम मात्र का अस्तित्व भी खतरे में था जैसे गोद निषेध नीति, कुशासन के नाम पर अवध का विलय।
- इससे शासकों मे एक भय की स्थिति निर्मित हुई।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform

इसी प्रकार डलहौजी ने विभिन्न शासकों को अपमानित भी किया जैसे बाजीराव द्वितीय के दत्तक पुत्र नाना साहेब को पेंशन देने से इनकार किया, यह घोषणा की कि मुगल शासक बहादुर शाह जफर के उत्तराधिकारी लाल किले के बाहर रहेंगे; कर्नाटक, तंजौर इत्यादि के शासकों की उपाधियों भी छीन ली गई।

- अवध के विलय ने शासकों के भय को चरम पर पहुँचाया (क्योंकि अवध के शासकों ने अंग्रेजों के साथ किए गए सभी सन्धि समझौतों का पालन किया था),
अवध के विलय ने समाज के अन्य वर्गों को प्रभावित किया जैसे- किसानों पर करों का बोझ बढ़ा, अवध के लगभग 75 हजार सैनिकों की क्षेत्रीय निष्ठा आहत हुई, लगभग 20 हजार से अधिक छोटे-बड़े जमींदारों की जमींदारियां नीलाम कर दी गई।

प्रशासनिक कारण :-

- प्रशासन के अलग-अलग क्षेत्रों में भारतीयों के साथ नस्लीय आधार पर भेदभाव किया गया जैसे- निचले स्तर पर नौकरी, कम वेतन, भारतीयों के साथ दुर्व्यवहार इत्यादि भी ब्रिटिश विरोधी असंतोष को उभार रहा था।

सामाजिक कारण :-

अंग्रेजो के द्वारा समाज सुधार के लिए कुछ कदम उठाए गए जैसे- सती प्रथा, विधवा पुनर्विवाह, महिला शिक्षा का प्रावधान इत्यादि।
रूढ़िवादी भारतीयों ने इन कानूनों का विरोध किया और सामाजिक-पारिवारिक जीवन में इसे हस्तक्षेप के रूप में देखा।

धार्मिक कारण :-

- अंग्रेजो के द्वारा सामाजिक जीवन मे हस्तक्षेप के साथ- साथ ईसाई मिशनरियों को भी सरकार संरक्षण प्रदान कर रही थी। इनके द्वारा सरकारी कार्यालय, शैक्षणिक संस्था, सेना इत्यादि के बीच धर्मप्रचार किया जा रहा था, प्रलोभन दिया जा रहा था एवं धर्मांतरण भी किया जा रहा था इससे भी आम भारतीयों में असंतोष बढ़ता जा रहा था।
1850 ई० में धार्मिक निर्योग्यता कानून (लेक्स लोकी) के द्वारा धर्म परिवर्तन के स्थिति में भी पैतृक संपत्ति में अधिकार बने रहने का प्रावधान किया गया। इससे भी सरकार के प्रति आक्रोश बढ़ा।

सैनिक कारण :-

- विभिन्न कारणों से सैनिकों में भी असंतोष दिखाई पड़ते हैं जैसे- कम वेतन, दुर्व्यवहार, जातीय एवं धार्मिक प्रतीकों पर प्रतिबंध

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Trusted Learning Partner KHAN

समुद्र पार जाकर सैन्य सेवा देने के कारण उत्पादि।

- 1857 के विद्रोह से पूर्व भी कुछ एक अवसरों पर सैनिको ने विद्रोह किया था
जैसे- 1806 में वेल्लोर विद्रोह
1824 में बैरकपुर विद्रोह

डलहौजी के कार्यकाल में सैनिको को दिए जाने वाले निःशुल्क डाक की व्यवस्था समाप्त कर दी गई तथा कैनिंग के काल मे (1856) सामान्य सेवा भर्ती अधिनियम के द्वारा सैनिकों को विदेशो में जाकर भी सैन्य सेवा देना अनिवार्य कर दिया गया।

तात्कालिक कारण:-

- चर्बी वाले कारतूस का मुद्दा 1857 के विद्रोह का तात्कालिक कारण बना। सेना में एनफील्ड नामक नए राइफल को शामिल किया गया इसमें प्रयोग की जाने वाली कारतूस मे गाय एवं सुअर की चर्बी मिली हुई थी इसी मुद्दे को आधार बनाते हुए मार्च 1857 में बैरकपुर में मंगल पाण्डेय ने विद्रोह किया था और इसी मुद्दे को लेकर अप्रैल और मई 1857 मे मेरठ में सैनिको ने विद्रोह किया 10 मई 1857 से, मेरठ से विद्रोह की शुरुआत मानी जाती है।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR